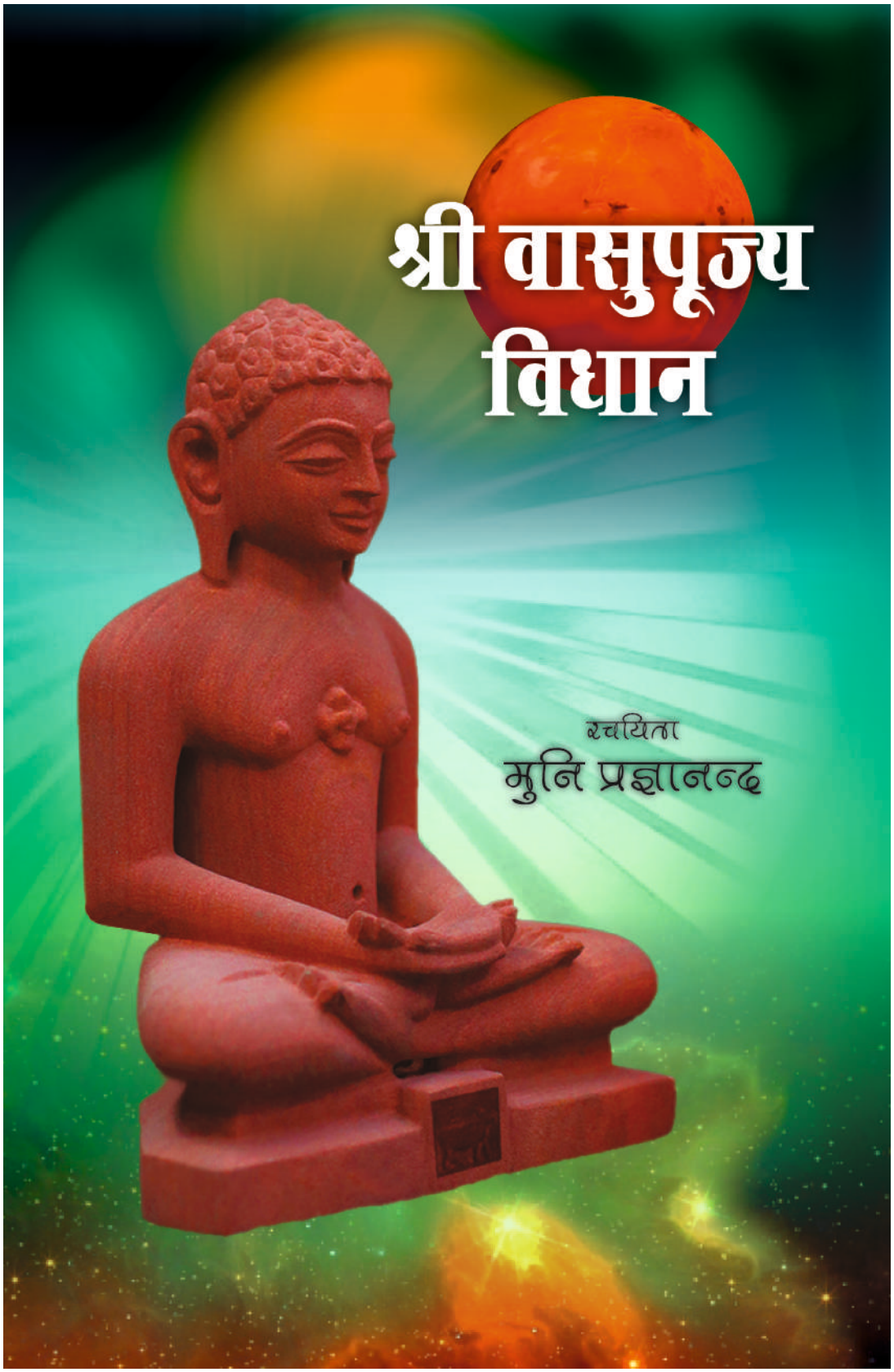
श्री वासुपूज्य
विधान
रचयिता
मुनि प्रज्ञानन्द

श्री वासुपूज्य विधान

मुनि प्रज्ञानन्द

॥ ॐ ॥

श्री वासुपूज्य विधान

मंगल आशीर्वाद :

परम पूज्य जिनशासनतीर्थ प्रवर्तक
आचार्य श्री १०८ वसुनन्दी जी मुनिराज

रचयिता :

मुनि श्री प्रज्ञानंद जी

प्रकाशक

निर्ग्रंथ ग्रन्थमाला समिति

प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर
श्री वसुनन्दीजी मुनिराज के ३२वें पावन वर्षायोग
(सेक्टर ५० नोएडा) के अवसर पर प्रकाशित

ग्रंथ	:	**श्री वासुपूज्य विधान**
मंगलाशीष	:	प.पू.आचार्य श्री १०८ वसुनंदी जी मुनिराज
लेखक	:	मुनि श्री प्रज्ञानंद जी
संपादन	:	बा. ब्र. प्रभाशीष (संघस्थ)
पुण्यार्जक	:	१. श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन श्रीमती मुन्नी देवी जैन सैक्टर ५१, नोएडा २. श्री सत्येन्द्र कुमार जैन श्रीमती मृदुला जैन सैक्टर १०७, नोएडा
प्राप्ति स्थान	:	**निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति (पंजी.), दिल्ली** 1. देवेन्द्र कुमार जैन, मो. 9867557668 2. अजय जैन नोएडा, मो. 9971548889
संस्करण	:	प्रथम सन् २०१७, द्वितीय संस्करण २०१९
प्रतियाँ	:	१०००
मूल्य	:	स्वाध्याय-सदुपयोग
मुद्रक	:	**चन्द्रा कॉपी हाउस** हॉस्पीटल रोड, आगरा-282003 मो. 9412260879

श्री वासुपूज्य विधान मंडल

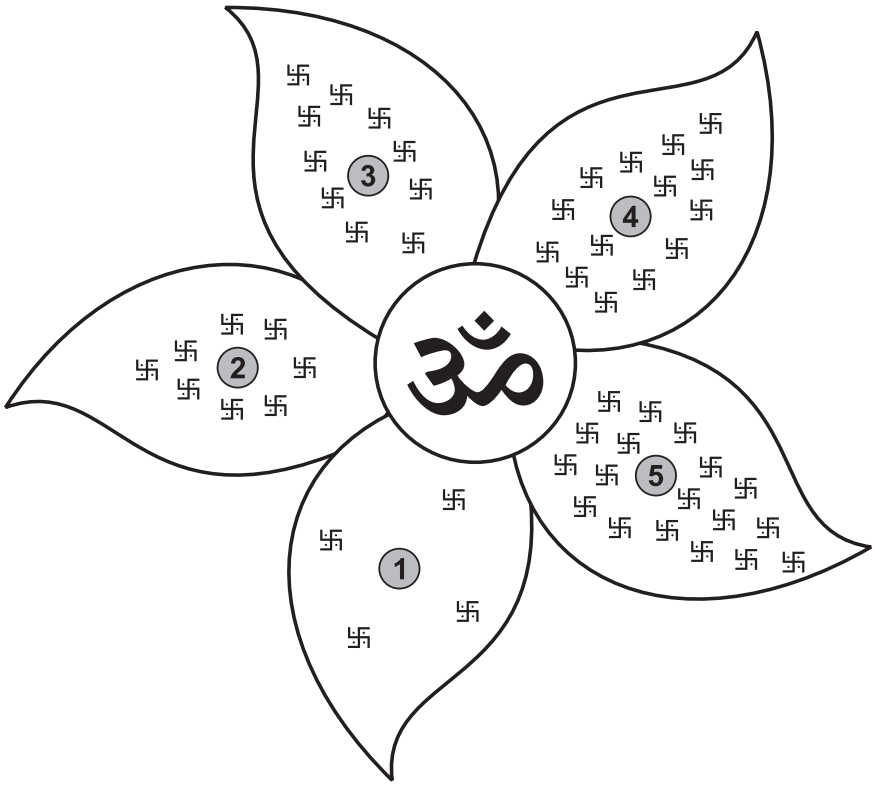

卐 गुरु शुभाशीष 卐

(आ० श्री वसुनंदी जी मुनिराज)

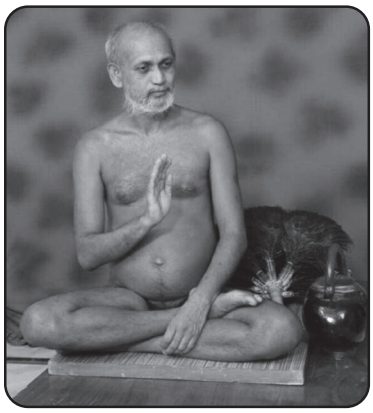

एकापि समर्थेयं, जिनभक्ति-दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः॥८॥

[समाधि भक्ति- आ० श्रीपूज्यपाद स्वामी]

अर्थात् कर्तव्य परायण, जिनभक्त की यह एकमात्र जिनभक्ति ही नरकादि दुर्गतियों का निवारण करने के लिए पुण्यों को पूर्ण करनेके लिए और मुक्ति लक्ष्मी को देने के लिए समर्थ हैं, पर्याप्त हैं।

वीतराग जिनदेव की अर्चना, पूजा, भक्ति, वंदना, स्तुति अशुभास्रव का संवर व शुभास्रव का हेतु तथा सातिशय पुण्यबंध में कारण मानी गई है। जो कोई भी भव्य जीव अत्यन्त निर्मलभावों के साथ तीनों योगों को विशुद्ध करके जिनेन्द्र भगवान की पूजा, भक्ति, उपासना करते हैं वे नरभव के श्रेष्ठ सुख तथा इन्द्रादि अवस्था के उत्तम भोगों को भोगकर कालान्तर में मोक्ष सुख को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

प्रथम बालयति, १२वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान का यह विधान रोग, शोक, भय, पीड़ा के विनाश का हेतु है, इष्ट कार्यों में आने वाले विघ्नों का

निवारक है तथा आरोग्य का संवर्द्धन करने वाला है। अतः भव्य जीव शक्ति अनुसार जिनभक्ति करके शिवमार्ग के पथिक बनें।

ज्ञान-ध्यान-तप में संलग्न बा. ब्र. अनगार मुनि प्रज्ञानंद जी ने प्रस्तुत कृति का स्वपर हित के लिए सृजन किया है वह श्लाघनीय है। बा. ब्र. प्रभाशीष भैया जी ने भक्ति से प्रेरित होकर संपादन का उचित दायित्व निर्वाहकर देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अपनी जो भक्ति प्रस्तुत की है निःसंदेह प्रशंसनीय है।

प्रस्तुत विधान के रचियता, संपादक तथा प्रत्यक्ष व परोक्ष में सहयोगी अन्य जो भी महानुभाव हैं उन सभी को यथायोग्य प्रतिनमोस्तु, सुसमाधीरस्तु शुभाशीष।

"सर्वेषां मंगलं भवतु"

जैनम् जयतु शासनम्
२ नवम्बर, २०१९
विवेक विहार,
दिल्ली

विश्वकल्याणकारकम्
ॐ अर्हं नमः
जिनवर चरणाक्बुज चंचरीक
कश्चिदल्पज्ञ श्रमण सूरी
वसुनंदी मुनि

卐 पुरोवाक् 卐

आचार्य भगवन् कुन्द-कुन्द स्वामी जी ने श्रावकों के मुख्य कर्त्तव्यों को उल्लिखित करते हुये कहा है-

"दाणं पूया मुक्खं सावय धम्मो ण सावया तेण विणा।"

दान और पूजा श्रावक के मुख्य कर्त्तव्य हैं इन कर्त्तव्यों से रहित श्रावकों को समीचीनता की श्रेणी में नहीं लिया जा सकता।

श्रावक धर्म परम्परा से मुक्ति का कारण है और श्रमण धर्म साक्षात् कारण है। श्रावक को धर्म मार्ग पर अग्रसर होने के लिए तीन ही आलम्बन हैं सच्चे देव-शास्त्र-गुरु, क्योंकि गृहस्थ निरालम्ब साधना नहीं कर सकता। गुरुओं का सान्निध्य उसे कभी-कभी ही प्राप्त होता है, शास्त्रों में लिखे सूत्रों को समझने में वह अनिभिज्ञ सा प्रतीत करता है किन्तु, जिनेन्द्र भगवान के दर्शन वर्तमान में श्रावक को अधिकांशत: सुलभ हैं। जिनकी आराधना, अर्चना, उपासना करके हम संसार के दु:खों से बच सकते हैं।

नि:शंकित व नि:कांक्षित भाव से पूजा करके भव्य प्राणी लौकिक व पारलौकिक तथा पूज्य पदों की प्राप्ति करके क्रमश: संसार सागर को पार करने में समर्थ हो जाता है।

वर्तमान में कई लोगों की जिज्ञासा रहती है कि भगवान तो विरागी होते हैं उन्हें ना तो अपनी निंदा से कोई सरोकार है और ना ही प्रशंसा से, तो फिर उनकी पूजार्चनादि से क्या प्रयोजन?

इसके उत्तर में आचार्य भगवन् समन्तभद्र स्वामी वृहद् स्वयंभू स्तोत्र में 12वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी की स्तुति करते हुए कहते हैं-

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ ! विवान्त वैरे।
तथापि ते पुण्य गुणस्मृतिर्नः पुनातुचित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः॥

अर्थात्–हे स्वामिन् ! यद्यपि राग से रहित आपमें ना तो पूजा किये जाने से ही कोई प्रयोजन है और न ही बैर से रहित आपमें निन्दा के द्वारा कोई मतलब है। तो भी आपके प्रशस्त गुणों का स्मरण हमारे मन को पाप रूपी अञ्जन से दूर रखकर पवित्र करता है।

यः करोति जिनेन्द्राणां पूजनं स्नपनं नरः।
स पूजामाप्य निःशेषां लभते शाश्वती श्रियम्॥

जो मनुष्य जिनेन्द्र भगवान का पूजन और अभिषेक करता है, वह सम्पूर्ण पूजा प्रतिष्ठा को प्राप्त कर अविनाशी मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त होता है।

जिन पूजा सम पुण्य ना दूजा, कथित तत्त्व आगम वरणी।
कोटि-कार्य छोड़ के मुझको, जिनवर की पूजा करनी॥

जिन पूजन से बढ़कर अन्य कोई दूसरा पुण्य नहीं है क्योंकि, सच्चा पुजारी ही पूज्य अवस्था को प्राप्त करता है। करोड़ों सांसारिक कार्य करके जिन पूजा नहीं हो सकती किन्तु एक जिन पूजन से आपके करोड़ों कार्य स्वतः ही सिद्ध हो सकते हैं।

विघ्ना प्रणश्यन्ति भयं न जातु, न दुष्ट देवा परिलङ्घयन्ति।
अर्थान्यथेष्टांश्च सदा लभन्ते, जिनोत्तमानां परिकीर्तनेन॥

(धवला पु. १-आ. श्री वीरसेन स्वामी)

जिन में भी उत्तम अर्थात् तीर्थंकर देव का कीर्तन करने से सभी विघ्न विलय को प्राप्त हो जाते हैं, सभी प्रकार के भय नष्ट हो जाते हैं। दुष्ट व्यन्तरादि देव बाधा उत्पन्न नहीं करते। सभी प्रकार की इच्छित सामग्री सहज ही प्राप्त हो जाती है।

प्रस्तुत कृति में १२वें तीर्थंकर श्रीवासुपूज्य भगवान के गुणों की अर्चना के साथ ही उनके कल्याणकारी जीवन चरित्र को भी संक्षेप में दर्शाया गया है।

वर्तमान में मिथ्यात्व में भ्रमित जीवों को सम्यक्त्व के मार्ग पर आरूढ़ करने हेतु इस विधान की रचना की गई है। अज्ञानता से ग्रसित प्राणी मंगल ग्रह अरिष्ट निवारणार्थ अन्य मिथ्यादृष्टियों की उपासना में संलग्न हो जाते हैं किन्तु इस सम्यक् रीति से सच्चे देव की आराधना कर वे सम्यक्त्व को प्राप्त करते हुए मंगल ग्रह अरिष्ट को विनाश करने के साथ ही जीवन में समीचीन मंगल आचरण को अंगीकार करके परम्परा से आत्मिक सुख को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। इस महार्चना के माध्यम से भव्यजीव अपने जीवन में आनन्द और मंगल की स्थापना करें। ऐसा भी कहा जाता है कि श्री वासुपूज्य भगवान की उपासना सभी प्रकार के रोगों का शमन करने में समर्थ है।

परम पूज्य आचार्य भगवन् गुरुदेव श्री वसुनंदी जी मुनिराज "रयण कण्डो" (प्राकृत सूक्ति कोष) में कहते हैं कि-

भत्ती हु जिणदेवस्स इट्ठ सिद्धि करेदि सया॥२१४०॥

जिनदेव की भक्ति सदा इष्ट सिद्धि करती है।

विणा भत्तिमुल्लेण को लहदि मुत्ति-अंगणा॥२१४३॥

बिना भक्ति रूपी मूल्य के मुक्ति-अंगना को कौन प्राप्त करता है? अर्थात् कोई नहीं।

यदि हमें उत्तम सुखों को प्राप्त करने की इच्छा है तो सदैव जिनदेव, शास्त्र व गुरु की भक्ति में त्रय योगों से संलग्न रहना चाहिए।

—बा. ब्र. प्रभाशीष
(संघस्थ आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज)

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट-प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवन ख्याताश्चुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाचाऽष्टौ-वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्यादिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मोदेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥९॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणायुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥१०॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशादागत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशादागत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशादागत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशादागत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशादागत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

रक्षा–मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्न क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष-दोषकल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झौं झौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रां णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला रक्ता

रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षप्तिं-सर्वगन्धपुष्पाढ्य-ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

(मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे.....मासे.....पक्षे..... तिथौ..... वासरे.....प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं.....कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

॥ अभिषेक पाठ ॥

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत-पद-प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-स्तव-वन्दना-समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

यः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि।

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ, तालध्वजा-तपनिवारक-भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन् ! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

श्रीतीर्थकृत्-स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ-कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

शातकुम्भीय-कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

आनन्द-निर्भर-सुर प्रमदादि-गानैः,
वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम-भवैनीरैः क्षीर-वारिभि-रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्र सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झ ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्वां ह्वीं ह्वूं ह्वें ह्वैं ह्वों ह्वौं ह्वं ह्वः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पाः,
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

नत्वा मुहूर्निज-करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र ! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरहर्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःखाऽपहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च, व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्, भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवर्द्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन् ! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः **श्री शान्तिधारा** श्री वीतरागाय नमः

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाण सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतियं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति-प्रसादालक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव- दारिद्रोद्भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री.....
.....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्मबलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

उपजाति छन्द

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥

तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥

मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हों, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव॥२॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदो मन वच काय॥३॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥ इति मंगल पाठ ॥

पूजा-विधि प्रारम्भ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थियो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥

एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥

अर्हमित्यक्षरं बह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥२॥

स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥

द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः॥
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥४॥

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव॥
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥५॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति–मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।
॥ पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंघानल-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥ इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

❑❑

नवदेवता पूजन

[आ० वसुनंदी मुनि]

स्थापना

त्रलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद-हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दु:ख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधिपरकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्म वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्य करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥

वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❑❑

श्री वासुपूज्य पूजन

स्थापना

(तर्ज - मैं देव श्री अरिहंत पूजूँ)

हे जगतवंद्य जिनेन्द्र तव पद युगल में वंदन करूँ।
श्री वासुपूज्य महंत संत हृदय तुम्हारे पद धरूँ॥
तुम बालयति वसुपूज्य सुत, जननी जयावती ही कही।
अर्चन तुम्हारा नित करूँ, पाने गुणालय शिव मही॥

दोहा

आह्वानन करता प्रभु, हाथ जोड़ सिर नाय।
हृदय कमल पर तिष्ठिये, मैं पूजूँ हर्षाय॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रः अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वानम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज - वंदे जिनवर)

निर्मल जल जग के सब मल को, मलमलकर धो देता है।
तव दर्शन पूजन करने से, मम मन निर्मल होता है॥
रत्नत्रय की निधि पाने को, निर्मल नीर चढ़ाता हूँ।
जन्म जरा मिट जाये हमारे, शिव मग बढ़ता जाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप से तपे हुये को, तव पद है शीतल छाया।
पाप ताप संताप मिटाने, भविजन चरणों में आया॥
निर्मल शीतल चंदन लेकर, तव चरणों में धार करूँ।
तव वाणी का आश्रय लेकर, शीघ्र भवोदधि पार करूँ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत-क्षत होता चित्त हमारा, खण्ड-खण्ड अरमान हुये।
इन्द्रिय सुख अरु जग के वैभव, बिंदु ओस सम क्षणिक हुये॥
मुक्ता सम अक्षय अक्षत ले, तव पद नित्य चढ़ाता हूँ।
तुम सम अक्षय पद पाने को, नित-नित पूज रचाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल पुष्प की मधु में फँसकर, मधुकर प्राण गंवाता है।
विषय भोग का जहर विषैला, भव-भव में भटकाता है॥
दुर्निवार इन विषय भोग का, हनन करूँ शिव सौख्य वरूँ।
सुरतरु के सुरभित पुष्पों को, बालयति चरणाग्र धरूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस व्यंजनों का रस चखकर, आतम रस ना चख पाया।
भौतिक रस में लीन हुआ पर, निज स्वरूप ना लख पाया॥
धृतपूरित नैवेद्य चढ़ाकर, क्षुधा वेदनी नाश करूँ।
वासुपूज्य की पूज रचाकर, जगत पूज्य शिवधाम वरूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग के शाश्वत दिनकर, तुमको मैं क्या भेंट करूँ।
भक्ति प्रेरणा से प्रेरित हो, स्वर्ण दीप चरणाग्र धरूँ॥
भौतिक दीप शिखा केवल जग, अंधकार विनशाती है।
प्रभु आपकी केवल ज्योति, मोक्षमार्ग दर्शाती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार विनाशनाय अज्ञानतिमिर हराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नि में कर्म दहन कर, निष्कलंक कहलाये हो।
तव पथ के अनुगामी भविजन, निश्चित कर्म खापाये वो॥

अगर तगर की धूप सुगंधित, दहन हेतु चरणाग्र धरूँ।
कज्जल सम वसु कर्म जलाने, मुक्ति पंथ का काज करूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक सुख की चाह में भगवन्, नर भव निष्फल कर डाला।
मोक्ष महाफल मिला न अब तक, खुला ना कर्मों का ताला॥
षट् ऋतुओं के मधुर सुफल ले, तव चरणों में आऊँगा।
वासुपूज्य की पूजन करके, जीवन सफल बनाऊँगा॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा का शुभ अर्घ चढ़ाकर, भाव यही इक मन लाया।
नश्वर पद को छोड़ के पाऊँ, शाश्वत शिव तरु की छाया॥
नहीं वस्तु अनमोल कोई जो, तुम्हें समर्पित मैं कर दूँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बना निज, भावों को अर्पित कर दूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

उर सरोज पर आ बसें, तव पद दीनानाथ।
जयमाला अर्पित करूँ, धरूँ चरण में माथ॥

(छंद-चौपाई)

जय श्री वासुपूज्य जिन देवा, सुर-नर असुर करे तुम सेवा।
मुनिगण तव पद ध्यान लगाते, ध्यान लगा निज आनन्द पाते॥
जय-जय प्रथम बालयति स्वामी, बारहवें तीर्थंकर नामी।
अरूण वर्ण तव तन है दमके, बाल सूर्य ज्यों गगन में चमके॥
वसूपूज्य नृप पिता तुम्हारे, जयावती के राजदुलारे।
तव पग भैंसा चिन्ह सुशोभित, तव सुन्दर छवि करती मोहित॥

जो भवि तव शुभ नाम हैं जपते, दुख दरिद्र क्षणमात्र में हरते।
भक्ति पूजन-अर्चन तेरी, नशति है भव-भव की फेरी॥
जय श्रीमान स्वयंभू त्राता, विश्वव्यापि धर्मेश्वर दाता।
जय अविनाशी आत्म विलासी, अन्तर्दृष्टा परम प्रतापी॥
जय अविनश्वर पद के दाता, जय त्रैलोक्यदर्शी सुखदाता।
जय महायोगी जय महाज्ञानी, परम दिगम्बर मुक्ति दानी॥
शांत सौम्य छवि तव मनहारी, भवि जन को लगती सुखकारी।
वीतराग मुद्रा मन भाती, निज स्वरूप को है दर्शाती॥
भ्रम अरि नाशक तेरी वाणी, सुनकर भव से तरते प्राणी।
तव पद रज जो मस्तक धरता, पाप रंग ना उसके चढ़ता॥
नाथ आपकी महिमा भारी, विगलित हो सब अघ बीमारी।
भौम अरिष्ट तुरत है नशता, तव सुमिरन जो नित है करता॥
जो युक्ति तुमने अपनाई, मुक्ति वधू से करी सगाई।
मुक्ति की युक्ति बतला दो, भव सागर से पार लगा दो॥

दोहा

नाथ आपके नंत गुण, कैसे करूँ बखान।
अज्ञ शिशु की भक्ति को, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

जग सुख शांति हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
पाऊँ शिवपुर खेत, पुष्पांजलि से पूजहूँ॥

(शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

प्रथम कोट

अनंत चतुष्टय

(तर्ज-निरखो अंग-अंग जिनवर के.....)

निरखो शांति छवि जिनवर की, इनकी महिमा अपरम्पार॥टेक॥
ज्ञानावरणी कर्म महा, ज्ञान सभी हर लेय।
तव चरणाम्बुज पूजते, नंत ज्ञान प्रगटेय।
तातै जिनपद शीश नवाऊँ, इनकी महिमा अपरम्पार। निरखो.....

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञान-गुण-संयुक्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन आवरणी नशा, झलका लोकालोक।
नाशा दृष्टि आपकी, हरे जगत का शोक॥
तातै नाशादृष्टि निहारूँ, इनकी महिमा अपरम्पार। निरखो.....

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शन-गुण-संयुक्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान खड्ग से कर दिया, मोह कर्म का नाश।
नंत सुखी जिननाथ ही, करते आत्म विकास॥
तातै जिनमुख लखि हर्षाऊँ, इनकी महिमा अपरम्पार। निरखो.....

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुख-गुण-संयुक्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय को नाश कर, नंत शक्ति को पाय।
नंत बली जिनराज ही, मुक्ति पथ दर्शाय॥
तातै श्री जिन पूज रचाऊँ, इनकी महिमा अपरम्पार। निरखो.....

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत-वीर्य-गुण-संयुक्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद

हे जग नायक, मुक्ति प्रदायक, मम मन लायक गुणधीरा,
धर्म प्रदायक, गुणनिधि दायक, परम विनायक भवतीरा।
तव चरण पखारूँ तुम्हें पुकारूँ, तुम पर वारूँ जग निधियाँ,
निज आत्म निखारूँ, संयम धारूँ, नित्य निहारूँ तव सुधियाँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचतुष्टय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

द्वितीय कोट

पंचकल्याणक अर्घ

दोहा

हुई रत्नगर्भा मही, चंपापुर की आज।
गर्भ में प्रभुवर आ गये, भवि कल्याण के काज॥

(तर्ज - मैं देव श्री अरिहंत पूजा)

आषाढ़ कृष्णा षष्टी को, सुर इन्द्र सब हर्षा रहे।
रत्नों की वर्षा स्वर्ग से, प्रमुदित हुये बरसा रहे॥
वसुपूज्य नृप माता जयावती, के नयन हैं खिल रहे।
मानों अनंतो जन्म के शुभ पुण्य फल हैं मिल रहे॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णाषष्टम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्तये श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आलोकित जगती हुई, हुआ दिव्य आलोक।
वासुपूज्य अवतार ले, नष्ट करें सब शोक॥

शुभ नाद घंटा शंख भेरी, दुन्दुभी के हो रहे।
भानि विशाखा में त्रिजग के, दुःख सारे खो रहे॥
मेरु पे तव अभिषेक से, क्षीरोदधि पावन हुआ।
लगता है चौदस कृष्ण को, फाल्गुन में ज्यों सावन हुआ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्तये श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भेष दिगम्बर धर लिया, नश्वर जग को जान।
मुक्ति पथ पर बढ़ गये, वासुपूज्य भगवान॥

कृष्णा चतुदर्शी फाल्गुनी, भानि विशाखा का उदय।
दीक्षा मनोहर वन में धारी, पाने कर्मों पर विजय॥
निज पूर्व भव को जानकर, भोगों से मन अकुला गया।
शुभ ध्यान सिद्धों का किया, शिव पंथ को अपना लिया॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्तये श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

एक बरस तप धारकर, पाया केवल ज्ञान।
भक्ति युत सुर ने किया, समवशरण निर्माण॥

घाति करम की कालिमा, ध्यानाग्नि से सब जल गई।
शिव पंथ दर्शायक प्रभु को, ज्ञान ज्योति मिल गई॥
शुभ माघ शुक्ला दोज में, भानि विशाखा जब रहा।
सुन भव्य जीवों को मिला तव, पंथ शिवपुर का महा॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लाद्वितीयां ज्ञान कल्याणक प्राप्तये श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

समवशरण विघटित हुआ, मिला परम परिणाम।
कर्म बंध को तोड़कर, पहुँचे शिवपुर धाम॥

नक्षत्र नभ में अश्विनी, फाल्गुन की कृष्णा पंचमी।
शिवपुर पधारे शीघ्र ही, पायी निराकुल लक्ष्मी॥
मंदारगिरी इन्द्रादि से, पूजित हुआ इस लोक में।
साक्षात् प्रभु कैसे मिले, व्याकुल है भवि इस शोक में॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णपंचम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्तये श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के अर्घ

दोहा

तप संयम अरु ज्ञान का, दर्शन इक आधार।
सम्यक् हो तो शिव लहे, मिथ्या हो निस्सार॥

(तर्ज- मैं देव श्री अरिहंत पूजूं....)

अन्तर विशुद्धि पवन से, मिथ्यात्व घन को नश दिया।
पच्चीस दोषों से रहित, सम्यक्त्व क्षायिक वश किया॥
हे नंत गुण धारी प्रभू, मिथ्यात्व मेरा नाश हो।
त्रय रत्न की निधियाँ मिलें, वसु भूमि पर मम वास हो॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनगुण-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दृग व्रत संवर्द्धक सदा, देता सौख्य अपार।
ज्ञान समान न जगत में, मनुज जन्म का सार॥

सद्ज्ञान की सम्प्राप्ति से, निज आत्मगुण विकसित किये।
अज्ञान तम हैं नाशते, अरु भाव निज समकित लिये॥
हे नंत गुणधारी प्रभो, सद्बोध का सुविकास हो।
त्रयरत्न की निधियाँ मिलें, वसु भूमि पर मम वास हो॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्ज्ञान-गुण-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

व्रत संयम को धारकर, लहा मोक्ष का द्वार।
इस बिन मुक्ति होय ना, नंत करो उपचार॥

त्रयोदश विधि वा पंच विध, चारित्र में जो प्रवृत्त हैं।
लखते वही हैं मोक्ष सेतु, शुभ्र जिनका चित्त है।
हे नंत गुणधारी प्रभो, चारित्र का सद्भास हो।
त्रयरत्न की निधियाँ मिलें, वसु भूमि पर मम वास हो॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्चारित्रगुण-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद

हे गुणआगर, संयम सागर, चिन्मय आकर, शिवकन्ता,
तुम आत्म सुखाकर, चित्त प्रभाकर, वचनसुधाकर, अरिहंता।
मैं पूज रचाऊँ, मंगल गाऊँ कर्म नशाऊँ, शिवपाने,
हृदय बसाऊँ, पुष्प चढ़ाऊँ, बलि-बलि जाऊँ अघ हाने॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणकविभूति-विभूषिताय रत्नत्रय गुण संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

तृतीय कोट

जन्म के दस अतिशय

छंद - भुजंगप्रयात

(तर्ज-नरेन्द्रफणेन्द्र....)

जिन रुप लखकर चकित इन्द्र देवा।
तव तन के सन्मुख हों नत कामदेवा॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयसुन्दररूप जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धी रहे तन में निर्मल स्वभावी।
जैसे हो पुष्पों की बगिया गुलाबी॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततन जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से ना किन्चित भी बहता पसीना।
अचरज है भारी ये देखा कहीं ना॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पसेव रहिततन जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मलमूत्र श्लेष्म ना होता निहारा।
चाहे हो अमृत का दिव्य आहारा॥

प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं निहाररहित देह जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रभु की है पीयूष वाणी।
सदा सुन के सन्तुष्ट हों भव्य प्राणी॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं हित-मित-प्रिय वचन जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतुल बल तुम्हारा जगत में है न्यारा।
सुरेन्द्र-नरेन्द्र भी करते किनारा॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलबल जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल रक्त की तन में अद्भुत है माया।
दया प्रेम वत्सल की अनुपम है छाया॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिर जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिमाण युत अंग प्रभु के समाना।
सुसंस्थान का ध्यान सुख का खजाना॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्रसंस्थान जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रंग संहनन जो मुक्ति को देता।
जिसे पाके श्री जी बने मोक्ष नेता॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराच संहनन जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चिन्ह सहस्र अठोत्तर हैं तन में।
पापादि भावों का ना लेश मन में॥
प्रभु जन्म अतिशय की महिमा को गाऊँ।
अन्तस की भक्ति से, सिर को झुकाऊँ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रअष्टोत्तर-शुभलक्षण जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद

आप दयालु, परम कृपालु, हृदय बसालूँ सुखकारी,
निज चित्त रमा लूँ, कर्म नशालूँ, तुम्हें बुलालूँ हितकारी।
हे दुक्ख विदारक, कर्म प्रहारक, धर्म प्रचारक शिव नेता,
हे निज गुणधारक, भव्य सुधारक, मोक्ष प्रदायक जग त्रेता॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

चतुर्थ कोट

देवकृत १४ अतिशय

(तर्ज:- अनादि काल से.....)

अर्द्ध मागधी भाषा प्रभु की खिरती है शीतल वाणी।
चार कोश तक समवशरण में सुनकर तिरते भवि प्राणी॥
जिनवाणी रस पान करन से मोह तिमिर न रहे कदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धमागधीभाषा देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सभा में क्रूर पशु भी, बैर भाव को भूले हैं।
मात भ्रात व मित्र भाव धर, तव भक्ति में झूले है॥
जिन भक्ति का फल मैं पाऊँ, बैर भाव न रखूँ कदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभाव देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशायें निर्मल होतीं, जहाँ रचा शुभ समवशरण।
जिन भक्ति चित निर्मल करती, मिट जाता भव जाल भ्रमण॥
वासुपूज्य की पूज करन से, पाप पंक ना चढ़े कदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥३॥

ॐ ह्रीं दश-दिशनिर्मल देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात न ओलावृष्टि निर्मल ही आकाश सदा।
पाप पंक सब धुले सभी का, चित्त सुनिर्मल होय सदा॥
शुभ भावों से अर्घ चढ़ाऊँ, धर्म रहित ना रहूँ कदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलआकाश देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् ऋतुओं के फल फूलादिक, एक समय ही आ जाते।
भविजन प्रकृति की शोभा लख, मन ही मन अति हर्षाते॥
पुण्य योग से सब जीवों को, प्रकृति होती सौख्य प्रदा।
सुरकृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वऋतुकफलयुतवृक्ष देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्दिशा में इक योजन तक, पृथ्वी दिखती काँच समान।
हर्षोल्लासित भविजन होते, पाते हैं आतम सम्मान॥
नीर क्षीर वत् सुख अरु प्रकृति, होते नहीं हैं कभी जुदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदर्शवत्पृथ्वी देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विहार करें जब नभ में, देव कमल रचना करते।
द्विशत् पंच विंशति नीरज, रच अनुपम सुख को वरते॥
भाव भक्ति वश पंकज रचकर, रोग शोक से रहें जुदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं पगतलद्विशत-पंचविंशतिस्वर्णकमल देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की भक्ति करते वे, देव करें नभ से जयगान।
मन वच काया की ये परिणति, दे जाती है पुण्य महान॥
भव्यों को जयकार शब्द ये, लगते है उत्कृष्ट सदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं जयकारध्वनि देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचरजकारी समवशरण में, मंद सुगंध बयार चले।
अन्तस्थल संतृप्त बने अरु, भव्यों के सब रोग गले॥
भक्ति पवन के झोंको से तो, कर्म धूल न टिके कदा।
सुर कृत चौहद अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंदसुगंधवयार देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पावन भूमि पर झरती, गन्धोदक की वृष्टि जहाँ।
रोग शोक संताप मिटाते, भविजन पाते शांति महा॥
जिनगन्धोदक पाने वाले, भवाताप न सहे कदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदकवृष्टि देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु कुमार देवों के द्वारा, पृथ्वी सदा शोधी जाती।
उस भूमि में रहने वाले को न गोदी ललचाती॥
मिल जाती है बोधि सहज ही, निर्मल शाश्वत सौख्य प्रदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कंटकभूमि देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्ष भाव से सुरगण भी प्रभुवर की भक्ति में रमते।
पूर्व बद्ध पापों के फल को, पल भर में मिथ्या करते॥
कण-कण में हो हर्ष भाव नित, भव्य जीव हो मुक्त मुधा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्प्रदेशेहर्षभाव देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जब गमन करे तब, धर्म चक्र आगे चलता।
भव्य जनों के रोग शोक अरु, पापों को निश्चित दलता॥

धर्म चक्र की महिमा केवल, भव्य जीव को विजय प्रदा।
सुर कृत चौदह अतिशय, पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रप्रवर्तन देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि मंगल कारक जग में, वसु द्रव्य ही कहलाते।
तीर्थंकर के समवशरण में, नियमित ही देखे जाते॥
मंगल कारक द्रव्य लखे जे, पाप कर्म सब होय विदा।
सुर कृत चौदह अतिशय पाने, जिन चरणों में रहूँ सदा॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्य देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद

हे दिव्य जिनेशा, नमत सुरेशा, वन्द्य गणेशा, सुखकारी।
तुम शिवपथनायक, मोक्षप्रदायक, भवि मलछायक, अघहारी॥
श्री वासुपूज्य जिन, तुम्हें रात दिन, भजें सर्व मुनि, मोक्षार्थम्।
प्रभु नाथ शरण तुम, माथ चरण तुम, साध करण तुम, सौख्यार्थम्॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवकृतातिशय-संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

पंचम कोट

केवलज्ञान के १० अतिशय

तर्ज- (मेरी लगी गुरु संग प्रीत)

शत योजन भूमि सूभिक्ष, जिन महिमा भारी।
कहीं होवे ना दुर्भिक्ष, हर्षित नर नारी॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरुँ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं शतयोजन सुभिक्ष केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नभ मे करें विहार, भवि के पुण्यों से।
रहते धनु पंच हजार, ऊपर भूमि से॥
अतिशय धारी भगवान, चरणन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरुँ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमन केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर मुख दिखते चार, चऊ गति मेटन को।
परमौदारिक तन सार, आतम हेरन को॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरुँ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखप्रतिभास केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूले निज विकृत भाव, बैरी जीव वहाँ।
हो दया भाव परभाव, तिष्ठे देव जहाँ॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरुँ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभावरहित केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहि होय कोई उपसर्ग, जिनवर भक्तों पर।
नशता कष्टों का वर्ग, सिर जिन चरणों पर॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरुँ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गरहित केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कवलाहार विमुक्त, आतम भुक्त प्रभु।
करते कर्मों से मुक्त, भवि को शीघ्र विभो॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरूँ॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहार रहित केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या ऋद्धि ईश, क्षायिक ज्ञान धरें।
हो नम्र नवाऊँ शीश, भव संताप हरें॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरूँ॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्याईश्वरत्व केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना नख बढ़ते ना केश, केवल जिन महिमा।
पूजत मिट जाये क्लेश, बढ़ जाती गरिमा॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरूँ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धि रहित केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनिमिष दृग नाशा दृष्टि, जग आशा विनसे।
झलके आतम विच सृष्टि, घाति कर्म नशें॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरूँ॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृग केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिबिम्ब रहित जिन देह, है परमौदारिक।
तप ध्यान लहूँ शिव गेह, है जो आलौकिक॥
अतिशय धारी भगवान, चरनन पूज करुँ।
नित गाऊँ तव गुणगान, शिव पद स्वात्म वरूँ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं छायारहित केवलज्ञानातिशय संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ

(तर्ज- उमरिया रह गई थोड़ी...)

(ऐ मेरे वतन के लोगों....)

सिंहासन अद्भुत सोहे, भविजन के मन को मोहे।
तिष्ठे हैं त्रिभुवन राई, हम पूजें ध्यान लगाई॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल शुभ छवि दायक, भवि के भव का दर्शायक।
जिन कांति मम चित भाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्रत्रय जिन सिर मांहि, सुर नर सब महिमा गाई।
त्रैलोक में आप सहाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यमंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चमरेंद्र गुणों को गावें, नित चौसठ चंवर ढुरावें।
जिनवर छवि सब मन भाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्टीचंवर-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब शोकहारि है रूक्षा, सुखकारी अशोक वृक्षा।
तरु युत जिन को सिर नाईं, हम पूजें ध्यान लगाई॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक तरु-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर दुन्दुभि नाद करावें, भवि को जिन पास बुलावें।
भक्ति करि-करि हर्षाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभिःनाद-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वांग से निसृत वाणी, जिनवाणी भवि कल्याणी।
सुन दिव्य ध्वनि सुध आई, हम पूजें ध्यान लगाई॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपुष्प स्वर्ग से बरसें, छवि देखन को मन तरसे।
शुभ समवशरण छवि छाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य मंडिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

हे जिन वीरा, संयम धीरा, चिन्मय हीरा, दुक्खहरं,
मेटो भव पीरा, ज्ञान प्रवीरा, भवदधि तीरा, सौख्यकरं।

हे बालयतीश्वर, ज्ञान विधीश्वर, आत्ममहीश्वर, गुणधारी,
तुम सर्व विधीश्वर, केवलधीश्वर, मुक्ति अधीश्वर अघहारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानातिशय अष्टप्रातिहार्य संयुक्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र (१०८ बार जाप करें)
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा

पूजा पूजक को सदा, परमपूज्य कर देय।
वासुपूज्य भगवान को, पूजूँ मन वच देह॥

चाल-शेर

तर्ज - (नवदेवता पूजन जयमाला)

जय जय नमूँ श्री वासुपूज्य देव महाना,
तव नंत गुणों का प्रभो कैसे हो बखाना।
जब चार ज्ञान धारी तव महिमा ना गा सके,
शब्दों में अज्ञ भक्त के वह कैसे आ सके॥१॥

फिर भी खड़ा हूँ हाथ जोड़-भक्ति के लिये,
स्वीकारो मेरे भाव शुभ्र मुक्ति के लिये।
इस भक्त की भक्ति को प्रभु जान लीजिये,
मैं तुम समान बन सकूँ वह ज्ञान दीजिये॥२॥

चम्पापुरी है सुप्रसिद्ध अंग देश में,
जहाँ राज्य करते वसुपूज्य नृप के भेष में।
रानी जयावती प्रसन्न स्वप्न देख कर,
की रत्नों की वर्षा वहाँ कुबेर ने आकर॥३॥

तव जन्म समय शान्ति छायी तीनों लोक में,
सब बैर भाव भूले, न था कोई शोक में।
तव अरुण वर्ण बाल सूर्य के समा सोहे,
अभिषेक हुआ मेरु पे मन भव्य का मोहे॥४॥

सुर क्रीडा के लिये सखा बन स्वर्ग से आते,
अरु वस्त्र अलंकार भोज साथ में लाते।
साक्षात् साथ आपका जिन भव्य ने पाया,
आनन्द अति था उन्हें अद्भुत थी वो माया॥५॥

थे 'वज्रनाभि' नृप के पुत्र आप "पद्मोत्तर",
शुभ भावना जो भाई बना योग तीर्थंकर।
निज पूर्व भव को जान हुआ "जाति स्मरण",
वैराग्य हुआ ज्ञान जगा तप की ली शरण॥६॥

हे बालब्रह्मचारी तुम्हें भोग न भाये,
तव संस्तुति को ब्रह्मऋषि स्वर्ग से आये।
चढ पालकी उद्यान "मनोहर" में पधारे,
राजा थे छः सौ छः जो संग आपके चाले॥७॥

सिद्धों का किया ध्यान लिया भेष दिगम्बर,
हर्षा "कदम्ब" वृक्ष तुरिय ज्ञान को लखकर।
"जय" राजा प्रफुल्लित हुआ आहार करा कर,
इन्द्रों ने पंचाश्चर्य किया श्रेष्ठ वहाँ पर॥८॥

छद्मस्थ काल एक वर्ष आपका रहा,
दुर्धर तपस्या से मिला सुज्ञान था महा॥
चऊ घाति कर्म नाश करके केवली बने,
कैवल्य ज्योति तेरी तिमिर पाप को हने॥९॥

सत्तर धनु की काया स्वर्ण सम चमक रही,
सुरकृत समवशरण की आभा है दमक रही।

शनमुख व गौरी यक्ष यक्षी गीत गा रहे,
अघ मेटने को भक्ति से तुमको रिझा रहे॥१०॥

छियासठ गणी सुधर्म आदि वाणी तव गहें,
श्रोता प्रधान स्वयंभू सद्ज्ञान हैं लहे।
सहस्र बहत्तर थे मुनि धर्म पक्ष में,
वरसेना गणी षट् सहस्र एक लक्ष में॥११॥

दो लाख श्रावक और चार लाख श्राविका,
सुर नर तिर्यंच भी करें सत्कार आपका।
रहे केवली जिनदेव जी उनचास लाख वर्ष,
भव्यों को मिला बोध हुआ चित्त में सुहर्ष॥१२॥

इक्ष्वाकुवंश में उदित हुआ था भास्कर,
इच्छायें पूर्ण कर रहे हो आँख मींच कर।
आयु प्रभू की ज्येष्ठ वर्ष लक्ष चोहत्तर,
नशकर अघाति पाया तुमने लोक का शिखर॥१३॥

सिद्धत्व पाकर नाथ कृत्य कृत्य हो गए,
जग बंधनो को तोड़ जग से मुक्त हो गए।
मंदारगिरी सिद्ध भूमि सिद्धि की दाता,
आरत जगत का मंद करे, मन से जो ध्याता॥१४॥

कर्पूर वत् सुदेह तब विलीन हो गया,
नख केश तव क्षीरोदधि में हीन हो गया।
व्रत रोहिणी के ईश नाथ आप कहाते,
मंगल ग्रह अरिष्ट को हो शीघ्र नशाते॥१५॥

निज अज्ञ शिशु की त्रुटि को माफ कीजिये,
जबलों न पाऊँ मोक्ष तबलों साथ दीजिये।
वसु गुण लहें जो पुण्य कथा आपकी गाते,
मुनि प्रज्ञानंद आपको नित शीश झुकाते॥१६॥

श्री शांतिसिन्धु सूरी मुनि धर्म प्रचारी,
आचार्य पायसागर की महिमा है न्यारी।
जयकीर्ति सूरि की सुकीर्ति विश्व है जाने,
आचार्य देशभूषण गौरव हिन्द का माने॥१७॥

सिद्धान्त चक्री विद्यानन्द ज्ञान के धनी,
माता पिता सखा गुरु वसुनंदी जी गणी।
हुई भूल चूक प्रज्ञ जन सुधार कीजिये,
बन जाऊँ स्वयं सिद्ध वो वरदान दीजिये॥१८॥

घत्ता छंद

सर्व महेशा, जयत हमेशा, पूजे सुर नर खग्गेशा।
तुम धर्म धुरंधर, मुक्तिरमावर, सर्व सौख्यकर विद्येशा॥
हम पूज रचायें, मंगल गायें, हर्ष मनायें, सुखकारी।
मम ताप मिटाओ, पाप हटाओ, काम नशाओ, त्रिपुरारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वकल्याणकारकाय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः जयमाला सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

वासुपूज्य जिनराय, महिमा तुमरी को कहे।
नाम लेत हो काज, जो पूजे सो शिव लहे॥

(शान्तिधारा, पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❑❑

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥

कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-पुञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल-थल-आकाश-गृहा-पर्वत-नगरवर्ति-ऊर्ध्व-मध्य-अधोलोकेषु विराजमान-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान-विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च-भरत-पञ्च-ऐरावत-दशक्षेत्र-सम्बन्धि-त्रिंशत्-चतुर्विंशतिगत-विंशत-उत्तर-सप्तशत-जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धि-द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

सम्मेदशिखर-कैलाश-चम्पापुर-पावापुर-गिरनार-सोनगिरि-राजगृही-मथुरा-शत्रुञ्जय-तारङ्गा-कुण्डलपुर आदि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढबद्री-हस्तिनापुर-चन्देरी-पपौरा-अयोध्या-चमत्कारजी-महावीरजी-पद्मपुरी-तिजारा-आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....नाम्नि नगरे ....मासानामुत्तमे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थ अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति–पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक॥

दिव्य विटप बहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को॥

(वसन्ततिलका)

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥

(स्रग्धरा)

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ॥

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।

हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥

पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥

आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जापहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें)

❑❑

श्री वासुपूज्य की आरती

वसुपूज्य के लाल की, चम्पापुर के भाल की।
चलों उतारें आज आरती, जयावती सुकुमाल की॥टेक॥

जन्म समय में, तीन लोक में, अनुपम खुशियाँ छायीं थीं।
तव सुन्दर छवि को लखकर के, सुरनगरी शरमायी थी।
जन्म कल्याणक काल की, नंत गुणों के माल की।

चलो उतारें..... ॥१॥

तप अग्नि में कर्म जलाकर, नंत ज्ञान को प्रकटाया।
आत्म सुमन की सौरभ लखकर, भौतिक जग को ठुकराया।
प्रथम बालयति लाल की, अनुपम सौख्य रसाल की।

चलो उतारें..... ॥२॥

मंदारगिरि से कर्म वसु नश, मुक्ति श्री परिणाई थी,
राजा पद्मरथ ने भक्ति कर, मोक्ष लक्ष्मी पाई थी,
शाश्वत ज्योति विशाल की, भक्ति की शुभ ताल की,

चलो उतारें..... ॥३॥

शनमुख गौरी ने आकर के, तुमको शीश झुकाया था,
कुबेर पति से इन्द्रराज ने, समवशरण रचवाया था,
दाल न गलती काल की, कर्म भार जंजाल की,

चलो उतारें..... ॥४॥

रत्नदीप से थाल सजाकर, द्वार तुम्हारे आये हैं।
तव चरणों की आरती करके, मन में अति हर्षायें हैं।
वासुपूज्य वसु लाल की, द्वादशवें जिनराज की।

चलो उतारें..... ॥५॥

❑❑

परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनन्दी मुनिराज के द्वारा रचित, लिखित, संपादित एवं उनके संघ से प्रकाशित अमूल्य ग्रंथों की सूची

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
	प्रथमानुयोग शास्त्र
1	नंगानंग कुमार चारित्र
2	मौन व्रत कथा
3	व्रताधीश्वर रोहिणी व्रत
4	प्रभंजन चरित्र
5	चारुदत्त चरित्र
6	सीता चरित्र
7	सप्त व्यसन चरित्र
8	वीर वर्द्धमान चरित्र
9	देशभूषण कुलभूषण चरित्र
10	चित्रसेन पदमावती चरित्र
11	सुदर्शन चरित्र
12	सुरसुन्दरी चरित्र
13	करकण्डु चरित्र
14	नागकुमार चरित्र
15	भद्रबाहु चरित्र
16	हनुमान चरित्र
17	महापुराण भाग 1
18	महापुराण भाग 2
19	श्री जम्बूस्वामी चरित्र
20	यशोधर चरित्र
21	व्रत कथा संग्रह
22	राम चरित भाग 1
23	राम चरित भाग 2
24	राम चरित संयुक्त प्रकाशन
25	आराधना कथा कोष भाग 1
26	आराधना कथा कोष भाग 2
27	आराधना कथा कोष भाग 3
28	शान्ति नाथ पुराण भाग 1
29	शान्ति नाथ पुराण भाग 2
30	सम्यक्त्व कौमुदी
31	धर्मामृत भाग 1
32	धर्मामृत भाग 2
33	पुण्यास्रव कथा कोष भाग 1
34	पुण्यास्रव कथा कोष भाग 2
35	पुराण सार संग्रह भाग 1
36	पुराण सार संग्रह भाग 1
37	सुलोचना चरित्र
38	गौतम स्वामी चरित्र
39	अमरसेन चरित्र
40	श्रेणिक चरित्र
41	महीपाल चरित्र
42	जिनदत्त चरित्र
43	सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
44	चेलना चरित्र
45	धन्यकुमार चरित्र
46	सुकुमाल चरित्र
47	क्षत्रचूड़ामणि जीवंधर चरित्र
48	चन्द्रप्रभ चरित्र
49	कोटिभट श्रीपाल चरित्र
50	महावीर पुराण
51	वरांग चरित्र

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
52	पांडव पुराण
53	सुशीला उपन्यास
54	भरतेश वैभव
55	पार्श्वनाथ पुराण
56	त्रिवेणी
57	मल्लिनाथ पुराण
58	विमलनाथ पुराण
59	चौबीसी पुराण
60	पदम पुराण
61	सिंदूर प्रकरण
	काव्य शास्त्र
1	चैन की जिन्दगी
2	हीरों का खजाना
3	कल्याणी
4	हाइकु
5	क्षरातीत अक्षर
6	न मैं चुप हू न गाता हू
7	मुक्ति दूत के मुक्तक
	विधान - पूजन साहित्य
1	श्री शान्तिनाथ विधान
2	अरिष्ट निवारक विधान संग्रह
3	पंचपरमेष्ठी विधान
4	श्री शान्तिनाथ, भक्तामर, सम्मेदशिखर विधान
5	समवशरण महार्चना
6	यागमंडल विधान
7	श्री महावीर विधान
8	श्री भक्तामर विधान
9	श्री अजितनाथ विधान

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
10	णमोकार महार्चना
11	दु:खों से मुक्ति, सहस्त्रनाम विधान
12	श्री चन्द्रप्रभ विधान
13	श्री चन्द्रप्रभ विधान तिजारा
14	श्रद्धा के अंकुर
15	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
16	श्री जम्बूस्वामी विधान
17	श्री वासुपूज्य विधान
18	श्री नंदीश्वर विधान
19	श्री पदमप्रभ विधान
20	श्री संभवनाथ विधान
21	श्री पुष्पदंत विधान
22	श्री मुनिसुव्रत नाथ विधान
23	श्री नेमिनाथ विधान
24	कल्याण मंदिर विधान
25	निर्ग्रन्थ विधान
26	पूजा अर्चना
	प्रवचन
1	मीठे प्रवचन भाग-1
2	मीठे प्रवचन भाग-2
3	मीठे प्रवचन भाग-3
4	मीठे प्रवचन भाग-4
5	मीठे प्रवचन भाग-5
6	दशामृत
7	श्रुत निर्झरी
8	तैयारी जीत की
9	गुरुत्तं भाग-1
10	गुरुत्तं भाग-2

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
11	गुरुत्तं भाग-3
12	गुरुत्तं भाग-4
13	गुरुत्तं भाग-5
14	गुरुत्तं भाग-6
15	गुरुत्तं भाग-7
16	गुरुत्तं भाग-8
17	गुरुत्तं भाग-9
18	गुरुत्तं भाग-10
19	गुरुत्तं भाग-11
20	गुरुत्तं भाग-12
21	न मिटना बुरा न पिटना
22	ठहरो ऐसे चलो
23	जीवन का सहारा
24	सीप का मोती (महावीर जयंती)
25	चूको मत
26	खोज क्यों रोज रोज
27	जय बजरंगबली
28	शायद यही सच है
29	सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य कथा
30	नारी का धवल पक्ष
31	आईना मेरे देश का
32	उत्तम क्षमा
33	मान महा विषरूप
34	रंचक दगा बहुत दुख:दानी
35	लोभ पाप को बाप बखाना
36	सतवादी जग में सुखी
37	जिस बिना नहिं जिनराज सीजे
38	तप चाहे सुरराय
39	निज हाथ दीजे साथ लीजे
40	परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो
41	उत्तम ब्रह्मचर्य
42	वसुनंदी उवाच प्रवचनांश
43	धर्म की महिमा
44	सफलता के सूत्र
45	आज का निर्णय
46	गुरु कृपा
47	गुरुवर तेरा साथ
48	स्वाति की बूँद
49	गागर में सागर
50	खुशी के आंसू
51	वसु विचार
52	एक हजार आठ
53	सर्वोदयी नैतिक धर्म

प्राकृत साहित्य (स्वरचित)

1	मंगल-सुत्तं
2	अप्प विहदो
3	मूल वण्णो
4	अट्ठंग-जोगो
5	विस्स धम्मो
6	समवसरण सोहा
7	अंते समाहि-मरणं
8	सिविण सत्थं
9	जिण वयण सारा
10	जोदिस सत्थं
11	वत्थु सत्थं
12	अज्झप्प सुत्तं
13	विणय सारो

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
14	हियु वदेसो
15	णंदिणंद सुत्तं
16	रट्ठ-संति-महाजण्णो
17	अज्ज-सक्किदी
18	धम्म-सुत्तं
19	अहिंसगाहारो
20	जदि-किदि-कम्मं
21	णिग्गंथ-थुदी
22	जिणवर-थोत्तं
23	तच्च-सारो
24	विज्जा-वसु-सावयायारो
25	अणुवेक्खा-सारो
26	सुद्धप्पा
27	रयणकंडो
28	धम्म-सुत्ति संगहो
29	णमोयार महप्पुरो
30	विस्स-पुज्जो दियंबरो
31	अजिय सहस्सणाम-थुदी
32	पसमभावो
33	समणायारो
34	अर्हम सूक्ति कोश
35	सुहासिद-सुत्तं
36	झाण-सारो
37	अम्माणं अज्जवत्तो
	अनुवादित व संपादित साहित्य
1	वसु ऋद्धि
2	तत्वोपदेश छहछाला
3	दिव्य लक्ष्य
4	पंच रत्न
5	गुणरत्नाकर
6	तत्वार्थ सूत्र
7	विषापहार स्तोत्र
8	पुरुषार्थ सिद्धियुपाय
9	जिन कल्पि सूत्रम्
	रचित साहित्य
1	हमारे आदर्श
2	आहार दान
3	सर्वोदयी नैतिक धर्म
4	कलम पट्टी बुद्धिका
5	धर्म संस्कार
6	जिन सिद्धांत महोदधि
7	सदगुरु की सीख
8	धर्म संस्कार भाग-1
9	धर्म संस्कार भाग-2
10	आधुनिक समस्यायें प्रामाणिक समाधान
11	धर्म बोध संस्कार-1
12	धर्म बोध संस्कार-2
13	धर्म बोध संस्कार-3
14	धर्म बोध संस्कार-4
15	संस्कारादित्य
16	दान के अचिन्त्य प्रभाव
17	'प्रमेया' टीका रत्न माला
	वाचना साहित्य
1	बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्न मालिका)
2	शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
3	स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
4	मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
	अन्य साहित्य
1	जिन श्रमण भारती
2	निज अवलोकन
3	धम्म रसायणं
4	योगामृत भाग-1
5	योगामृत भाग-2
6	योगसार भाग-1
7	योगसार भाग-2
8	अध्यात्म तरंगिणी
9	आराधना सार
10	सार समुच्चय
11	भगवती आराधना
12	मरण कंडिका
13	तत्वार्थस्य संसिद्धि
14	रयणसार
15	उपासकाध्ययन भाग-1
16	उपासकाध्ययन भाग-2
17	भव्य प्रमोद
18	सदार्चन सुमन
19	तत्त्वार्थ सार
20	नीति सार समुच्चय
21	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार
22	तनाव से मुक्ति भाग-1 (भजन)
23	तनाव से मुक्ति भाग-2 (भजन)
24	कुरल काव्य
25	प्रकृति समुत्कीर्तन
26	भावत्रय फलप्रदर्शी
27	श्री महावीर भक्तामर स्तोत्र

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
28	पहला सुख निरोगी काया
29	डाक्टरों से मुक्ति
30	आ जाओ प्रकृति की गोद में
31	तत्वज्ञान तरंगिणी
32	सुख का सागर
33	विद्यानंद उवाच
34	तच्च वियारो सारो
35	मूलाचार प्रदीप
36	धर्मरत्नाकर
37	अन्तर्यात्रा
38	Inspirational Tales Part 1
39	Inspirational Tales Part 2
40	संसार का अंत
41	चार श्रावकाचार
42	एक हजार आठ
43	जैन वर्ण माला
44	जिन दर्शन से निज दर्शन
45	कर्म विपाक
46	आत्मा का खजाना
47	साप्ताहिक विधान
48	श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान
49	धर्मांकुर
50	बिना त्याग आग ही आग
51	शायद यही सच है
52	प्रबोध सार
53	सरस्वती उपासना
54	कर्म प्रकृति
55	रदण सारो
56	नौनिधि

क्र.सं.	पुस्तक का नाम
57	वसु विचार
58	सारांश
59	स्वप्न विचार

परम पूज्य आचार्य श्री 108 वसुनन्दी मुनिराज के जीवन चरित्र पर आधारित साहित्य

1	समझाया रविन्दु न माना
2	दृष्टि दृश्यों के पार
3	पग वंदन
4	अक्षर शिल्पी
5	वसुनंदी प्रश्नोत्तरी

❑❑❑

क्र.सं.	पुस्तक का नाम

पावन आशीष

आचार्य वसुनन्दी मुनि

श्री निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति (पंजीकृत)

मुद्रक : चन्द्रा कॉपी हाउस, आगरा मो. 9412260879